

हरिभूमि भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार 23 अगस्त 2026

9 खरक से घर-घर कचरा संग्रहण और निस्तारण ...

10 59वीं राज्य स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता...



CHINAR
FABRICS
Chinar Mill Showroom

Style That Defines You

SALE STARTING FROM
14th August 2026
Till 28th August 2026

Biggest
SALE

PREMIUM STYLE . PREMIUM YOU

3 SHIRTS @ 999

PREMIUM SHIRTS

2 FORMAL TROUSER @ 999

PERFECT FIT * PREMIUM LOOK

2 COTTON TROUSER @ 1499

COMFORT THAT LASTS

PREMIUM FABRICS

BEST VALUE GUARANTEE

LATEST DESIGNS

PERFECT FIT ASSURED

CHINAR MILL SHOWROOM

Near Basia Bhawan, Hansi Road, Bhiwani, M-7056795900

GEETA NIKETAN COLLEGE OF NURSING

Recognised by HNRC Panchkula (Govt. of Haryana) Affiliated by Pt. B.D. Sharma U.H.S. Rohtak

REGISTRATION OPEN
Session 2026-27
AC HOSTEL Facility Available

P.B. B.Sc. NURSING
2 Years GNM Pass

GNM
3 Years 12th Any Stream
No Fees for S.C. Students

ANM
2 Years 12th Any Stream
No Fees for S.C. Students

B.Sc. NURSING
4 Year | 10+2 (Medical)

Loharu Road, Charkhi Dadri M. 9812538777, 9034669933

संयुक्त किसान मोर्चा ने मंत्री, सांसद और विधायकों के कैंप ऑफिस पर किया प्रदर्शन लिखित आश्वासन लागू नहीं होने पर फूटा गुस्सा

हरिभूमि न्यूज़ ► भिवानी

संयुक्त किसान मोर्चा के राष्ट्रीय आह्वान पर शनिवार को किसानों और मजदूरों की मांगों को लेकर मोर्चा कार्यकर्ताओं ने सत्ता पक्ष के विधायकों, मंत्री और सांसद के कैंप कार्यालयों पर प्रदर्शन किया। इस दौरान ज्ञान सौंपकर मांगों को लागू करवाने की मांग की गई। किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओमप्रकाश, जिला सचिव मास्टर जगरोशन आदि ने बवानाखेड़ा विधायक कपूर सिंह

वाल्मीकि को ज्ञान सौंपा। इसके बाद सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी के कैंप कार्यालय पर प्रदर्शन किया गया और उनकी अनुपस्थिति में निजी सहायक दिलबाग नीमड़ी को ज्ञान दिया गया। कार्यकर्ताओं ने भिवानी विधायक घनश्यामदास सराफ को भी ज्ञान सौंपा। वहीं, सांसद धर्मवीर सिंह की अनुपस्थिति में उनके निजी सहायक पंकज शर्मा ने ज्ञान लिया। मोर्चा नेताओं ने कहा कि 9 दिसंबर 2021 को किसान आंदोलन के दौरान केंद्र सरकार द्वारा एमएसपी, कर्जमाफी, बिजली



निजीकरण रोकने और किसानों पर दर्ज मुकदमे वापस लेने संबंधी दिए गए लिखित आश्वासन अब तक लागू नहीं हुए हैं। उन्होंने अमेरिका व यूरोपीय देशों के साथ प्रस्तावित व्यापार समझौते रद्द करने तथा मनरेगा का पुराना कानून लागू करने की मांग की। साथ ही 200 दिन काम और 700 रुपये दैनिक मजदूरी देने की मांग उठाई।

एमएसपी लागू नहीं होने से किसानों को हो रहा नुकसान

किसान नेताओं ने कहा कि एक अध्ययन के अनुसार एमएसपी की सी2+50 प्रतिशत लागू नहीं होने से 2016 से 2025 के बीच 20 प्रमुख फसलों में किसानों को 27 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। किसानों की मांग है कि 10 हजार रुपये प्रति माह सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जाए, अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र के लिए केन्द्रीय बजट का 6 फिसदी और शिक्षा के लिए जीडीपी का 6 प्रतिशत आवंटित किया जाए। उन्होंने कहा कि उनकी मांगें नहीं मानी जायेंगी तो संयुक्त किसान मोर्चा व केन्द्रीय ट्रेड यूनियन मिलकर किसान आंदोलन को 7वीं बरसी पर पुनः 26 नवंबर को दिल्ली की ओर कूच करेंगे।

ये रहे शामिल

इस अवसर पर मोर्चा के मास्टर उमराव सिंह, सुबेदार धनपत ओबरा, अतर कस्वा, निर्मल नाथुवास, कर्णसिंह जैनावास, रणधीर सांगवान, नरेंद्र डाडम, बलबीर बजाड़, राजेश कुंगड़, रामोतर बलियाली, संतोष देशवाल, प्रताप सिंहमार, वेदप्रकाश खेड़ी, नरेश शर्मा, राजकुमार दलाल, महेंद्र तंवर, ओमप्रकाश दलाल व सतबीर घुसकानी आदि मौजूद रहे।

हेरोइन सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

भिवानी। एंटी नारकोटिक्स सेल ने दिनोद शराब ठेके के पास छापेमारी कर अशोष निवासी गांव दिनोद को 5.73 ग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया। आरोपी स्वप्न डिजायर गाड़ी में मादक पदार्थ बेचने की फिराक में था। पुलिस ने गाड़ी कब्जे में लेकर आरोपी से पूछताछ शुरू कर दी है। एंटी नारकोटिक्स सेल भिवानी के एसएसआई जसवंत सिंह की टीम ने आरोपी को गुप्त सूचना के आधार पर पकड़ा है।

वाइडिंग चोरी मामले में दूसरा आरोपित पकड़ा

चरखी दादरी। पुलिस ने ट्रांसफार्मर की तांबे की वाइडिंग चोरी मामले में दूसरे आरोपी मनोज उर्फ गोलू निवासी नजफगढ़, दिल्ली को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने चोरी की क्वायल बेचकर मिली रकम में से 2 हजार रुपये बरामद किए। पूछताछ के बाद आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इसी मामले में सतीश निवासी मोड़ी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है।

बी.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ

पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शारीरिक शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (IGU) से सम्बंध महागण प्रताप कॉलेज ऑफ एजुकेशन, धनीन्दा (ब्याच - कॉर्ना), जिला सचिवद्वारा (हरियाणा) में 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. कोर्स) में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.एड. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंक तथा राज्य स्तर का खेल का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं। वेबसाइट www.mpcokenana.com व कॉलेज फोन नं. 9467834482, 8053910428 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Advt.)

OMSTERLING GLOBAL UNIVERSITY
(APPROVED BY UGC, MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)

Discover more at www.osgu.ac.in
info@osgu.ac.in

EXCELLENCE IN EDUCATION
18 Years

OSGUHISAR

SECURE YOUR SEAT

- ★ M.Pharm / Pharm.D
- ★ B.Pharm / D.Pharm
- ★ BFA/MFA
- ★ B.Sc./M.Sc. Agri.
- ★ B.Tech. - CSE - AIML, Cyber Security
- ★ B.Sc/M.Sc Hotel Mgmt.
- ★ BA LLB/LLB/LLM
- ★ BCA - (AI & Data Science, Cyber Security)
- ★ BA/BBA
- ★ B.Sc. (Forensic Science)

★ **B.Ed. Special Education** (HI / VI / ID / LD / MD) RCI APPROVED COURSES CODE HR 056

★ **B.Ed. M.Ed.** Special Education (ID/SLD)

Bachelor in Allied Healthcare (Para Medical)
(BMLS, B.Optomety, B.AOTT)
Diploma in Palliative Care Technology,
Diploma in Health Information Management,
Diploma in Medical Secretarial and Transcription

SALIENT FEATURES :

- ✓ Professional Education through reputed Academicians
- ✓ Modern Campus, Sports & Hostel Facilities
- ✓ Expert Career & Placement Support (Govt./Private)
- ✓ Govt. & Industries Collaboration for Advanced Learning

SEPARATE HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR BOTH GIRLS & BOYS

Campus : NH-52, Hisar-Chandigarh Road, Hisar-125001, Haryana

86078 99999
82550 99999

TATA की पेशकश

TANISHQ
Festival of Diamonds

नेचुरल डायमंड्स से सजे मनमोहक डिज़ाइन, जो आपकी चमक को सबसे अलग बनाएँ

पलैट 20% छूट
10,000+ डिज़ाइन्स में डायमंड की कीमत पर*

0% कमीती*
डायमंड ज्वेलरी खरीदते पर 9 कैरट प्रितले कम के पुराने सोने के एक्स्चेंज पर।

Talk to our Jewellery expert to know more ☎ 1800 2966 677 Buy online at tanishq.co.in or Download our App 📱 *Conditions apply, For T&C visit our website.

शोरूम :- विजय नगर, केएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल के पास, हांसी गेट, भिवानी टेली. 77290-93000



दोस्त या रिश्तेदार की मदद पड़ेगी भारी

लोन में गारंटर बनने के कई नुकसान

बिजनेस डेस्क

दोस्त, रिश्तेदार या करीबी व्यक्ति मुश्किल समय में आर्थिक मदद मांगता है तो मना करना आसान नहीं होता। कई बार व्यक्ति खुद लोन लेने की स्थिति में होता है, लेकिन बैंक की शर्तों के कारण उसे गारंटर की जरूरत पड़ती है। ऐसे में भावनात्मक रिश्ते के कारण लोन बिना पूरी जानकारी लिए लोन गारंटर बनने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन गारंटर बनना महज एक औपचारिकता नहीं है। इसका अर्थ है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी देनदारी पूरी नहीं करता, तो गारंटी की शर्तों के अनुसार बैंक आपसे भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। इसलिए किसी के लोन की गारंटी देने से पहले यह समझना जरूरी है कि इससे आपके क्रेडिट रिकॉर्ड, भविष्य में लोन लेने की क्षमता और व्यक्तिगत वित्त पर क्या असर पड़ सकता है।

गारंटर बनने का मतलब क्या

लोन में गारंटर वह व्यक्ति होता है जो बैंक या वित्तीय संस्थान को यह आश्वासन देता है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो लागू गारंटी की शर्तों के अनुसार वह देनदारी पूरी करेगा। इसलिए किसी दस्तावेज पर सिर्फ इसलिए हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए कि सामने वाला दोस्त या रिश्तेदार है। हस्ताक्षर करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आप किस रकम, किस अवधि और किन शर्तों के लिए गारंटी दे रहे हैं।

गारंटर बनते ही क्रेडिट स्कोर घटता है

नहीं, केवल गारंटर बनने से अपने आप क्रेडिट स्कोर खराब होना जरूरी नहीं है। अगर मुख्य उधारकर्ता समय पर ईएमआई चुका रहा है और लोन खाते में कोई डिफॉल्ट नहीं हो रहा है, तो सामान्य तौर पर केवल गारंटर होने की वजह से आपके क्रेडिट रिकॉर्ड पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। लेकिन समस्या तब शुरू हो सकती है जब मुख्य उधारकर्ता ईएमआई चुकाने में लगातार चूक करता है। ऐसी स्थिति में लोन खाते से जुड़ी डिफॉल्ट जानकारी गारंटर के क्रेडिट प्रोफाइल को भी प्रभावित कर सकती है। लगातार भुगतान में चूक होने से भविष्य में आपकी क्रेडिट हिस्ट्री पर नकारात्मक असर पड़ने का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए गारंटर बनने के बाद भी लोन की स्थिति पर नजर रखना जरूरी है।

बड़ा खतरा : कर्ज चुकाने की जिम्मेदारी

गारंटर बनने का सबसे महत्वपूर्ण जोखिम आर्थिक है। यदि मुख्य उधारकर्ता लोन की किस्तें नहीं चुका पाता है तो बैंक या वित्तीय संस्थान गारंटी समझौते की शर्तों के अनुसार गारंटर से भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। यानी जिस लोन का पैसा आपने लिया ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी कुछ परिस्थितियों में आपके ऊपर भी आ सकती है। यही वजह है कि गारंटर बनने से पहले यह सवाल खुद से जरूर पूछें। अगर सामने वाला व्यक्ति कल से ईएमआई देना बंद कर दे तो क्या में इस लोन की जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ? अगर इसका जवाब 'नहीं' है तो अगर रिश्तेदारी या दोस्ती के दबाव में गारंटर बनना जोखिम भरा हो सकता है।

लोन लेने में आ सकती है दिक्कत

गारंटर बनने का असर केवल क्रेडिट स्कोर तक सीमित नहीं है। जब आप भविष्य में होम लोन, कार लोन या कोई अन्य बड़ा कर्ज लेने के लिए अपेदन करते हैं तो बैंक आपकी मौजूदा वित्तीय जिम्मेदारियों और क्रेडिट प्रोफाइल का आकलन कर सकता है। जिस लोन की आपने गारंटी दी है, वह आपकी वित्तीय प्रोफाइल के आकलन में महत्वपूर्ण हो सकता है। खासकर यदि उस लोन में भुगतान संबंधी समस्या चल रही हो तो आपके लिए नया कर्ज लेना कठिन हो सकता है या बैंक अतिरिक्त जांच कर सकता है।

रिश्तेदार है तो भी पहले जांच करें

गारंटर बनने से पहले केवल रिश्ते को आधार न बनाएं। यह जानना जरूरी है कि जिस व्यक्ति के लोन की गारंटी आप दे रहे हैं, उसकी आय कितनी है, उसकी मौजूदा ईएमआई कितनी है और उस पर पहले से कितना कर्ज है। यह भी देखें कि उसकी नौकरी या कारोबार कितना स्थिर है। यदि उसकी आय अनिश्चित है या पहले से कई कर्ज चल रहे हैं तो गारंटर बनने का जोखिम बढ़ सकता है।

दस्तावेज पढ़े बिना न करें हस्ताक्षर

गारंटी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले बैंक से स्पष्ट रूप से पूछें कि आपकी जिम्मेदारी की सीमा क्या है। क्या गारंटी केवल मूल रकम तक सीमित है या इसमें ब्याज, शुल्क और अन्य देनदारियां भी शामिल हो सकती हैं? यह जानकारी दस्तावेज की शर्तों से ही स्पष्ट होगी। इसलिए किसी बैंक कर्मचारी, एजेंट या परिचित के कहने मात्र पर दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें। जरूरत हो तो स्वतंत्र वित्तीय या कानूनी सलाह भी ली जा सकती है।

ईएमआई की जानकारी लेते रहें

अगर आपने किसी के लोन की गारंटी दी है तो यह मानकर न चले कि अब आपकी कोई भूमिका नहीं है। मुख्य उधारकर्ता से समय-समय पर ईएमआई भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते रहें। किसी भुगतान में देरी की जानकारी मिले तो समस्या बढ़ने से पहले उधारकर्ता से बात करें। शुरुआती स्तर पर समस्या का समाधान करना लंबे समय तक चलने वाले डिफॉल्ट से बेहतर है।

दोस्ती और पैसा, दोनों को अलग रखें

किसी करीबी की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन मदद का अर्थ अपनी आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डालना नहीं होना चाहिए। यदि आपको लगता है कि सामने वाला व्यक्ति लोन चुकाने की स्थिति में नहीं है तो गारंटर बनने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार सीमित आर्थिक सहायता करना ज्यादा सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

फैसला लेने से पहले ये जरूर पूछें

- » क्या मैं इस व्यक्ति की आय और मौजूदा कर्ज को समझता हूँ?
- » अगर वह ईएमआई नहीं चुका पाया तो क्या मैं संभावित वित्तीय जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ?
- » क्या मैंने गारंटी दस्तावेज की सभी शर्तें पढ़ी हैं?
- » क्या भविष्य में मुझे खुद होम, कार या किसी दूसरे बड़े लोन की जरूरत पड़ सकती है?

मदद करें, लेकिन जोखिम समझकर

लोन गारंटर बनना दोस्त या रिश्तेदार की मदद करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन इसमें वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। समय पर ईएमआई वाली रहने पर समस्या नहीं आती, लेकिन मुख्य उधारकर्ता के डिफॉल्ट की स्थिति में गारंटर की क्रेडिट प्रोफाइल और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए गारंटर बनने से पहले भावनात्मक रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण अपनी भुगतान क्षमता, दस्तावेज की शर्तों और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को समझना है। किसी की मुश्किल में साथ देना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी मदद न करें जो बाद में आपके ही परिवार की आर्थिक सुरक्षा को मुश्किल में डाल दे।

दस साल में चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न

10 वर्ष में 4 लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न, हर माह 10000 की एसआईपी से 12 लाख का निवेश 31 लाख से ज्यादा, चारों फंडों ने दिया 18 से 19% तक एक्सआईआरआर

निवेश नत्रा बिजनेस डेस्क

लंबी अवधि में संपत्ति बनाने के लिए म्यूचुअल फंड की लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी निवेशकों के लिए एक विकल्प हो सकती है। इस श्रेणी के फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों के साथ मध्यम आकार की तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं। नियमों के अनुसार, ऐसे फंडों को कम से कम 35 प्रतिशत राशि लार्ज कैप और 35 प्रतिशत मिड कैप कंपनियों में लगानी होती है। इस तरह कम से कम 70 प्रतिशत पोर्टफोलियो देश की बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 250 कंपनियों में रहता है। 18 अगस्त 2026 को उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ऐसे रहे, जिनमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 31 लाख रुपये से ज्यादा हो गया। इनमें सबसे बेहतर प्रदर्शन इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड का रहा, जिसने 19.3 प्रतिशत का एक्सआईआरआर दिया।

इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड

इस सूची में इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड पहले स्थान पर है। अगस्त 2007 में शुरू हुआ यह फंड पहले इनवेस्को इंडिया ग्रोथ अपॉय्च्युनिटीज फंड के नाम से जाना जाता था। फंड शेयरों का चयन करने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर, दोनों तरह की रणनीति का इस्तेमाल करता है। इसमें किसी एक सेक्टर या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रखी जाती। इस फंड में 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 33.2 लाख रुपये हो गया। इस आधार पर इसका एक्सआईआरआर 19.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में इंटरनेल, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, इंटरग्लोब एविएशन, आईसीआईसीआई बैंक और प्रेस्टिज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, करीब 38.1 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 35.9 प्रतिशत मिड कैप और 23.1 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में था।



क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। दिसंबर 2006 में शुरू हुआ यह फंड शेयरों के चयन में आंकड़ों पर आधारित रणनीति अपनाता है। फंड हाउस का वीएलआरटी ढांचा कंपनियों के मूल्यांकन, नकदी की उपलब्धता, जोखिम और निवेश के सही समय जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की

एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.3 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में लॉयड्स मेटलस एंड एनर्जी, ऑरोबिंदो फार्मा, संवर्धन मद्रसन इंटरनेशनल, अडानी एंटरप्राइजेज और अडानी ग्रीन एनर्जी शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 38.2 प्रतिशत लार्ज कैप, 33.1 प्रतिशत मिड कैप और 5.2 प्रतिशत स्मॉल कैप में निवेश था।

निवेश के ये फॉर्मूले, अपनाएं कभी नहीं रहेगा पैसे का संकट

जानकारी बिजनेस डेस्क

पैसे को दोगुना से चार गुना तक आसानी से कर सकेंगे

इमरजेंसी फंड व इक्विटी डेट का संतुलन बनाएंगे

निवेश की दुनिया में विकल्पों की कोई कमी नहीं है। बैंक एफडी, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, इक्विटी, डेट और सोने जैसे कई माध्यमों में पैसा लगाया जा सकता है। लेकिन निवेश में सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि पैसा कहाँ लगाया गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि कितनी राशि निवेश की जा रही है, कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है और जोखिम को किस तरह नियंत्रित किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से वित्तीय योजना में कुछ आसान नियमों का इस्तेमाल किया जाता है। इन नियमों की मदद से निवेशक मोटे तौर पर यह समझ सकता है कि उसका पैसा कितने समय में दोगुना या चार गुना हो सकता है, आय का कितना हिस्सा खर्च और बचत में जाना चाहिए तथा इमरजेंसी के लिए कितनी रकम अलग रखनी जरूरी है। हालांकि ये नियम अनुमान देने वाले सामान्य वित्तीय फॉर्मूले हैं, इन्हें निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

रूल ऑफ 72, 114 और 144 कंपाउंडिंग को समझने के आसान तरीके हैं, जबकि 50-30-20, 100 माइनस एज और 10 फीसदी निवेश जैसे नियम व्यक्तिगत वित्त को व्यवस्थित करने में मदद कर सकते हैं। लेकिन किसी भी नियम को अंतिम निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। सही रणनीति बनाने के लिए निवेशक को अपनी आय, उम्र, जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य, कर्ज और निवेश की अवधि को ध्यान में रखना चाहिए। सबसे जरूरी बात यह है कि पहले इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा जैसी वित्तीय सुरक्षा तैयार करें, फिर लक्ष्य के मुताबिक नियमित और अनुशासित निवेश करें। निवेश में जल्द अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक टिके रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

1. रूल ऑफ 72

रूल ऑफ 72 का इस्तेमाल यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी निवेश को दोगुना होने में लगभग कितना समय लग सकता है। इसके लिए 72 को अनुमानित सालाना रिटर्न से भाग दिया जाता है।

फॉर्मूला: 72 ÷ अनुमानित रिटर्न = पैसा दोगुना होने का अनुमानित समय

उदाहरण के लिए, अगर किसी निवेश से सालाना 12 फीसदी रिटर्न मिलने की उम्मीद है तो 72÷12 = 6। यानी अनुमान के तौर पर पैसा करीब छह साल में दोगुना हो सकता है। इसी तरह चार साल में पैसा दोगुना करने के लिए करीब 18 फीसदी सालाना रिटर्न की जरूरत होगी। बाजार आधारित निवेश में वास्तविक रिटर्न अलग हो सकता है।

2. रूल ऑफ 114

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि आपका निवेश लगभग कितने समय में तीन गुना हो सकता है तो रूल ऑफ 114 इस्तेमाल किया जाता है।

फॉर्मूला: 114 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = 12 फीसदी अनुमानित सालाना रिटर्न के मामले में 114÷12 = 9.5 साल। यानी इस फॉर्मूले के अनुसार निवेश को तीन गुना होने में करीब साढ़े नौ साल लग सकते हैं।

3. रूल ऑफ 144

रूल ऑफ 144 से यह अनुमान लगाया जाता है कि निवेश कितने समय में चार गुना हो सकता है।



फॉर्मूला: 144 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = अगर अनुमानित रिटर्न 12 फीसदी सालाना है तो 144÷12 = 12 साल। यानी इस गणना के अनुसार पैसा करीब 12 साल में चार गुना हो सकता है। कंपाउंडिंग का असर लंबी अवधि में निवेश की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है।

4. 50-30-20 रूल

मासिक बजट को व्यवस्थित रखने के लिए 50-30-20 नियम काफी लोकप्रिय है। इसके अनुसार आय का करीब 50 फीसदी हिस्सा जरूरी खर्चों, 30 फीसदी गैर-जरूरी जरूरतों या इच्छाओं और 20 फीसदी बचत एवं निवेश के लिए रखा जा सकता है। हालांकि हर व्यक्ति की आय, पारिवारिक

जिम्मेदारियां और खर्च अलग होते हैं। इसलिए इसे एक शुरुआती बजटिंग फ्रेमवर्क की तरह इस्तेमाल करना बेहतर है। जिन लोगों पर कर्ज का बोझ अधिक है, वे निवेश से पहले महंगे कर्ज को कम करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

5. 100 माइनस एज रूल

निवेश पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का अनुपात तय करने के लिए 100 माइनस एज नियम का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें निवेशक की उम्र को 100 से घटाया जाता है। बची हुई संख्या को इक्विटी में निवेश का संभावित प्रतिशत माना जाता है। मसलन, 30 साल के निवेशक के लिए 100-30 यानी 70 फीसदी इक्विटी और 30 फीसदी डेट का

अनुपात माना जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इक्विटी का हिस्सा कम करने का विचार जोखिम को नियंत्रित करने से जुड़ा है।

6. न्यू, 10% निवेश नियम

इस नियम के अनुसार आय का कम से कम 10 फीसदी हिस्सा लंबी अवधि के लक्ष्यों के लिए निवेश किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात नियमित निवेश है। आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाते रहना चाहिए। मसलन, अगर किसी व्यक्ति की मासिक आय 50 हजार रुपये है तो शुरुआत में कम से कम 5 हजार रुपये लंबी अवधि के निवेश के लिए अलग रखे जा सकते हैं। भविष्य में वृद्धि से निवेश राशि बढ़ाने से कंपाउंडिंग का लाभ और मजबूत हो सकता है।

7. इमरजेंसी फंड रूल

सारी बचत को निवेश कर देना समझदारी नहीं है। अचानक नौकरी जाने, बीमारी, घर की मरम्मत या किसी अन्य आपात स्थिति में तुरंत उपलब्ध पैसे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह दी जाती है। अगर किसी परिवार का जरूरी मासिक खर्च 40 हजार रुपये है तो छह महीने के दिहाब से करीब 2.4 लाख रुपये का आपातकालीन फंड लक्ष्य बनाया जा सकता है। इस रकम को ऐसे माध्यम में रखना बेहतर होता है जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो।

निवेश कर सकता है नुकसान

पोर्टफोलियो में पड़ा ‘डेड मनी’ कहीं आपकी कमाई तो नहीं रोक रहा?

‘डेड मनी’ से बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि पोर्टफोलियो को लंबे समय तक बिना देखे न छोड़ें। साल में कम से कम एक या दो बार निवेश की समीक्षा की जा सकती है। इसमें यह देखना चाहिए कि कौन सा निवेश लक्ष्य के मुताबिक प्रदर्शन कर रहा है, कौन लगातार पिछड़ रहा है और क्या पोर्टफोलियो में जोखिम का संतुलन बना हुआ है। निवेश का उद्देश्य सिर्फ पैसा सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि उसे अपने वित्तीय लक्ष्यों के मुताबिक बढ़ाना भी है। इसलिए किसी निवेश में पैसा सिर्फ इस वजह से नहीं पड़ा रहना चाहिए कि उसमें नुकसान दिखाई नहीं दे रहा। अगर पैसा लगातार अपेक्षा से कम बढ़ रहा है, तो उसकी अवसर लागत भी वास्तविक नुकसान है। इसलिए पोर्टफोलियो में मौजूद हर निवेश से समय-समय पर यह सवाल पूछना जरूरी है। क्या यह पैसा मेरे लिए काम कर रहा है या सिर्फ पड़ा हुआ है? यही सवाल आपको ‘डेड मनी’ पहचानने और बेहतर वित्तीय फैसले लेने में मदद कर सकता है।

ख़बर संक्षेप



बैठक को लेकर चलाया जनसम्पर्क अभियान

तोशाम। 29 अगस्त को तोशाम के पंचायत भवन में होने वाली इनेलो की बैठक को लेकर इनेलो के किसान प्रकोष्ठ के भिवानी जिला अध्यक्ष अजीत बडेसरा ने तोशाम क्षेत्र के विभिन्न गांव का दौरा कर कार्यकर्ताओं और अन्य ग्रामीणों को निमंत्रण दिया। उल्लेखनीय है कि जननायक स्वर्गीय चौधरी देवीलाल के जन्मदिवस पर नूँह भेवात में आयोजित सम्मान समारोह का तोशाम हलकावासियों को निमंत्रण देने के लिए 29 अगस्त को इंडियन नेशनल लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी अभय सिंह चौटाला तोशाम के पंचायत भवन में पहुंचेंगे।



पंचायत की तैयारियों को लेकर आयोजित की बैठक

तोशाम। ऑल इंडिया किसान खेत जनजीवन के ज्वलंत मुद्दों को लेकर 26 अक्टूबर को रोहतक के नांदल भवन, बोहर में जो प्रदेश स्तरीय किसान, मजदूर, छात्र, युवा, महिला महापंचायत होने जा रही है, उसकी तैयारी में शनिवार को ऑल इंडिया किसान खेत-मजदूर मजदूर संगठन की तोशाम के पंचायत घर में बैठक आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता संगठन के जिला कमेटी सदस्य सुखबीर सिंह ने की। इस दौरान मौजूद वक्ताओं ने कहा कि किसानों के लिए मौत का वारंट भारत-अमेरिका कृषि व्यापार समझौता रद्द करने, एमएसपी पर सरकारी खरीद गारंटी का कानून बनाने, आंदोलनकारी किसान-मजदूरों पर युवाओं पर जुल्म-अत्याचार बन्द करने आदि मुद्दों को बुलंद किया जाएगा।

हलका स्तरीय कार्यकर्ताओं का सम्मेलन 29 को

बहल। बैराण में इंडियन नेशनल लोकदल का हलकास्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन 29 अगस्त को शाम चार बजे आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन में इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला मुख्यतिथि होंगे। उक्त जानकारी देते हुए पूर्व विधायक मां. धर्मपाल ओबरा, पूर्व विधायक ओमप्रकाश बडवा और हल्का अध्यक्ष भूपसिंह श्योरान ने बताया कि 29 अगस्त के कार्यक्रम को लेकर कार्यकर्ताओं में उत्साह बना हुआ है। उन्होंने बताया कि इस पर पार्टी जननायक चौ. देवीलाल के जन्मदिन पर मनाए जाने वाले सम्मान दिवस समारोह का आयोजन 27 सितंबर को नूँह में आयोजित होगा।

तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से गाय की मौत



बवानीखेड़ा। भिवानी-हांसी मुख्य मार्ग पर निजी स्कूल के पास शुक्रवार देर रात तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर लगने से गाय की मौत हो गई। हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। जानकारी अनुसार ट्रक की गति काफी तेज थी, जिसके कारण सड़क पर जा रही गाय उसकी चपेट में आ गई। वही हादसे की सूचना मिलते ही गोरक्षक दल के सदस्य मौके पर पहुंचे। साथ ही डायल 112 की पुलिस टीम भी घटनास्थल पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू किया।

बैठक में संगठन की मजबूती पर किया मंथन

तोशाम। शनिवार को भाजपा बापौडा मंडल शक्ति केंद्र की बैठकों का टिटानी तथा कुसुंभी में आयोजन किया गया। बैठक में अतिथि बापौडा मंडल प्रभारी सुनील शास्त्री ने शिरकत की। बैठकों की अध्यक्षता बापौडा मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने की और संगठन के आगामी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की और संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

घुसकानी स्कूल में बदलाव की पाठशाला के आ रहे

सकारात्मक परिणाम

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय, घुसकानी के शारीरिक शिक्षक विनोद पीकू ने कहा कि कहने व करने में दिन रात का अंतर है। सरकारी स्कूलों के सुधारीकरण के लिए सामाजिक संस्थाएं सहयोगी बनें। शिक्षकों, ग्राम पंचायतों के साथ मिलकर सामाजिक संस्थाएं धरातल पर कार्य करें। सरकारी स्कूल या शिक्षण संस्था किसी एक व्यक्ति के नहीं बल्कि पूरे समाज के बच्चे भविष्य संवारने के लिए पहुंचते हैं। सभी का दायित्व बनता है वे सरकारी स्कूलों



भिवानी। वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय, घुसकानी परिसर में घास की कटाई करते शारीरिक शिक्षक विनोद पीकू।

फोटो : हरिभूमि

में पहुंचकर वहां की समस्याओं को जाने और उनका समाधान में सहयोगी बनें। वे आज वीर शहीद कैप्टन ओपी दलाल राजकीय उच्च विद्यालय, घुसकानी में विगत से

चल रही बदलाव की पाठशाला के दौरान बच्चों व एसएमसी कमेटी के सदस्यों को संबोधित कर रहे थे। घुसकानी की पाठशाला में बदलाव नजर आ रहा है।

महिलाओं को रक्षाबंधन से पहले दिया तोहफा

गांव खरक में घर-घर से कचरा संग्रहण व निस्तारण कार्य शुरू

■ सरपंच राजकुमार ने हरी झंडी दिखाकर की शुरुआत

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

ग्राम पंचायत खरक कलां में शनिवार से घर-घर कचरा संग्रहण एवं निस्तारण का कार्य शुरू कर दिया गया है। जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी सोमबीर कादयान की देखरेख में ग्राम पंचायत के सरपंच राजकुमार ने हरी झंडी दिखाकर इस कार्य की शुरुआत की। ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए गांव में मनादी भी करवा दी गई है। एडीसी ने बताया कि जिले की जिले की 36 महाग्राम और 7500 से अधिक जनसंख्या वाली ग्राम पंचायतों में घर-घर से कचरा संग्रहण एवं उसके उचित निस्तारण का कार्य शुरू करने के लिए बैठक आयोजित कर इसका आह्वान किया गया था।



भिवानी। कचरा उठान अभियान को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

इसी कड़ी में ग्राम पंचायत खरक कलां ने पहल करते हुए यह कार्य शुरू किया है। प्रत्येक घर से कूड़ा उठाने के साथ-साथ ग्रामीणों को गीले, सूखे एवं अन्य प्रकार के कचरे को अलग-अलग रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सरपंच ने बताया कि फिलहाल एक ट्रैक्टर-ट्रॉली लगाकर कचरा संग्रहण की शुरुआत की गई है।

ग्राम पंचायत ने एडीसी का आभार जताया

एडीसी दीपक बाबूलाल कचरा ने बताया कि ग्राम पंचायत की ओर से रक्षाबंधन के त्योहार से पहले गांव की माताओं, बहनों और बेटियों को घर-घर कचरा संग्रहण की सुविधा का तोहफा दिया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि पहले विशेषकर महिलाओं को कचरा डालने के लिए दूर जाना पड़ता था, जिससे उनके काफी समय सफाई और अन्य घरेलू कार्यों में खर्च होता था। अब प्रत्येक घर के सामने ट्रैक्टर उपलब्ध होने से उन्हें कचरा बाहर ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ग्राम पंचायत ने इस कार्य के लिए एडीसी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी राजबीर प्रधान, पंच विनोद, सुरेन्द्र सिंह, रवि, तेजपाल, पप्पल सिंह, राजेन्द्र, कृष्ण भाटी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

रंगारंग प्रस्तुतियों से गूंज उठा बीके स्कूल

हरिभूमि न्यूज ►► बवानीखेड़ा

बीके शिक्षण महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आयोजित गेट-टुगेदर कार्यक्रम उत्साह, उमंग और प्रतिभाओं का ऐसा खूबसूरत संगम बन गया, जिसने महाविद्यालय परिसर को हंसी, तालियों और उल्लास से सरोबोर कर दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को खुशनुमा वातावरण प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें रचनात्मक प्रतिभा और आत्मविश्वास को मंच पर अभिव्यक्त करने का अवसर



बवानीखेड़ा। बीके महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थितजन।

देना रहा। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नृत्य, गीत, कविता पाठ, समूह नृत्य, मनोरंजक खेल, कॉमेडी,

भाषण एवं स्किट जैसी विविध प्रस्तुतियों से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। नृत्य की

मनमोहक प्रस्तुतियों पर जहां पूरा वातावरण तालियों से गूंज उठा, वहीं मधुर गीतों और भावपूर्ण कविताओं ने कार्यक्रम में संवेदनशीलता और सौंदर्य का रंग भर दिया। कार्यक्रम में महाविद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य सुभाष शर्मा, सुरेश जांगड़ा एवं सचिव योगेश शर्मा की गरिमाययी उपस्थिति रही। प्रधानाचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। प्रबंधन सदस्यों ने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की सराहना की।

सर्वोत्तम माता प्रतियोगिता में देवावास की सुशीला खंड स्तर पर रही अव्वल

हरिभूमि न्यूज ►► तोशाम

उपमंडल परिसर भवन में स्थित महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय में खंड स्तरीय सर्वोत्तम माता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सर्कल स्तरीय सर्वोत्तम माता प्रतियोगिता में विजेता रही माताओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान डॉ. मनीता, मिशन, सुपरवाइजर कुसुम मलिक एवं सुशील द्वारा माताओं से



पोषण, स्वास्थ्य एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं से संबंधित प्रश्न पृछे गए। प्रतियोगिता में ईशरबाल सर्कल से देवावास की

सुशीला ने प्रथम, तोशाम की मौनिका ने द्वितीय तथा दाणीमाहू की बनिता ने तृतीय स्थान प्राप्त कर अपने-अपने सर्कल का नाम रोशन किया।

शिक्षा और खेल के लिए अलग बजट का प्रावधान हो

विनोद कुमार 'पिकू' ने कहा कि सभी ग्राम पंचायतों में शिक्षा एवं खेलों के लिए अलग बजट होना चाहिए। इस राशि से विद्यालयों में खेल सामग्री, खेल मैदान, पेयजल, स्वच्छता, पुस्तकालय, पौधरोपण और अन्य जरूरी सुविधाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे स्थानीय स्तर पर विद्यालयों की छोटी-छोटी समस्याओं का शीघ्र समाधान भी संभव होगा। उन्होंने कहा कि विधायक और सांसद भी सरकारी स्कूलों में शिक्षा एवं खेलों को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएं। अपने क्षेत्रों के विद्यालयों की जरूरतों के अनुसार खेल मैदान, खेल सामग्री, पुस्तकालय, स्मार्ट कक्षाएं, पेयजल और अन्य सुविधाओं के विकास में उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग किया जाना चाहिए।

बदलाव की पाठशाला दे रही शिक्षा-खेल को नई दिशा

विनोद कुमार 'पिकू' ने कहा कि 'बदलाव की पाठशाला' के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ खेल, संस्कार, अनुशासन, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जागरूकता से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। बच्चों में छिपी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें उचित अवसर देना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

न्यूज डायरी



जन्मदिन को सेवा एवं संस्कारों का पर्व बनाएं : जावला

भिवानी। नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था के पर्यावरण रक्षक जेई बिजेश जावला ने अपने 54वें जन्मदिन पर महम रोड स्थित जन स्वास्थ्य विभाग परिसर में पांच पौधे लगाए गए। अनाज मंडी में जरूरतमंद बच्चों को फल व मिठाई वितरित की और गोरक्षा दल भिवानी द्वारा संचालित गोशाला में गायों को गुड़ व अन्य सामग्री खिलाकर गौ सेवा की गई। इस अवसर पर बिजेश जावला ने कहा कि अपने जन्मदिन को सेवा एवं संस्कारों का पर्व बनाएं।

मगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का बखान किया

भिवानी। हनुमान जोहड़ी धाम में महंत बालयोगी चरणदास महाराज के चार्लिनथ में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में प्रतिदिन सैकड़ों की श्रद्धालु पहुंचकर हरि कथा का रसास्वादन कर रहे हैं। कथा स्थल मगवान श्रीकृष्ण के जयकारों और धार्मिक भजनों से गुंजायमान है। कथा में हरिद्वार से पहुंचे कथावाचक स्वामी विवेकानंद सरस्वती महाराज ने मगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, पूतना वध, शकटासुर व तुलसीदा उद्धार तथा गोवर्धन पूजा का संगीतमय वर्णन किया। व्यास ने मगवान के अवतार का गूढ़ आध्यात्मिक महत्त्व समझाते हुए श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कथावाचक स्वामी विवेकानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि मगवान श्रीकृष्ण का जन्म केवल असुरों के संहार के लिए नहीं, बल्कि मानव चेतना में धर्म एवं प्रेम की स्थापना के लिए हुआ था।

अग्रवाल वैश्य समाज ने महिला कॉलेज में लगाए पौधे



भिवानी। पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अग्रवाल वैश्य समाज द्वारा आदर्श महिला महाविद्यालय परिसर में पौधरोपण अभियान चलाया गया। इस दौरान समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने करीब 50 पौधे रोपित किए। अभियान की खस बात यह रही कि प्रत्येक सदस्य ने अपने द्वारा लगाए गए पौधे के साथ अपनी नेम प्लेट भी लगाई और उसके संरक्षण एवं देखभाल की जिम्मेदारी स्वयं लेने का संकल्प लिया। समाज के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवाजीवाला के मार्गदर्शन एवं भिवानी विधानसभा अध्यक्ष सतीश वैद्य के संयोजन में हुए इस पौधरोपण के दौरान समाज के महासचिव आशीष मित्तल ने कहा कि केवल पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें पढ़े बहन तक नियमित रूप से पानी देना, उनकी सुरक्षा करना और समय-समय पर उनकी देखभाल करना भी उतना ही आवश्यक है।

बच्चों ने युवा ग्राम सभा में अनेक सामाजिक मुद्दे उठाए



भिवानी। शहीद हवलदार भागीरथ राजकीय वमावि हेतमपुरा में खंड स्तरीय युवा ग्राम सभा के आयोजन में विद्यालय कि छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया। बच्चों द्वारा युवा ग्राम सभा में अनेक सामाजिक मुद्दे उठाए गए जैसे- नशा मुक्त गांव, स्वच्छता व साफ सफाई, बिजली पानी जरूरत से ज्यादा असुरों न करने बारे, वीबी जी राम जी, एस आई आर बुढ़ाप पेंशन जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम का निरीक्षण बीईओ महेंद्र सिंह गिल जी द्वारा गठित कमेटी के सदस्य नवीन प्रवक्ता एवं आशा प्रवक्ता निर्णायक कमेटी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रवक्ता मुकुेश कुमार, प्रवक्ता सविता, प्रवक्ता अनीता यादव ,प्रवक्ता समिता लंबा ,संजय पीटीआई, श्वेता शर्मा, सुरेंद्र शास्त्री, सोमबीर भोरिया, विनोद कलकं, मुख्य शिक्षक संत कुमार, राजेश कुमार आदि मौजूद रहे।

मतदाता बूथ पर पहुंच कराएं वृत्तियों को दूर

लोहारू। लोहारू-54 विधानसभा क्षेत्र में निर्वाचन अधिकारी एवं एसडीएम मनोज दलाल के नेतृत्व में एसआईआर का कार्य सभी 246 बूथों पर इन दिनों जोरों पर है। पिछले दिनों बीएलओ द्वारा जिन मतदाताओं को वृत्ति संबंधी नोटिस प्रदान किए गए थे, उन मतदाताओं की वृत्तियों का आवश्यक दस्तावेजों के साथ निस्तारण किया जा रहा है। सभी बीएलओ ने नोटिस प्राप्त मतदाताओं से वोटर आईडी संबंधी सभी वृत्तियां समय रहते दूर करवाने की अपील की है। निर्वाचन अधिकारी के नेतृत्व में चल रहे इस एसआईआर कार्य में तेजी और पारदर्शिता लाने के लिए बीएलओ को आवश्यकतानुसार सहायक भी उपलब्ध करवाए हैं।

महाग्राम पंचायत चांग, खण्ड एवं जिला भिवानी सूचना

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत महाग्राम पंचायत चांग, खण्ड एवं जिला भिवानी (हरियाणा) में डोर टू डोर कचरा संग्रहण (घर-घर, सार्वजनिक संस्थान व गलियों से कचरा उठान) कार्य के लिए तीन माह के लिए विभाग द्वारा जारी शर्तों अनुसार हरियाणा श्रम विभाग से EPF व ESJ रजिस्टर्ड फर्मो/एजेंसियों/संस्थाओं से सीलबंद कोटेशन दिनांक 23 अगस्त से 28 अगस्त 2026 तक निम्न शर्तों के साथ आमंत्रित की जाती हैं:

1. ग्राम पंचायत की 2011 की जनगणना अनुसार प्रति व्यक्ति 14 रुपये प्रति माह के हिसाब से अदायगी की जायेगी, जिसमें वाहन, ड्राइवर व सफाई कर्माधी संबंधित फर्म/सोसाइटी का रहेगा।
2. प्रति ट्रैक्टर दायी जिसमे एक ड्राइवर एक सफाई कर्मचारी/हेल्पर रहेगा के लिए \$5000/- से अधिक की अदायगी कार्यरत फर्म/सोसाइटी को नहीं की जा सकेगी।
3. जिस फर्म / सोसाइटी के टेंडर बिंदु नं. 1 व 2 अनुसार कम होंगे उसे ही डोर टू डोर कचरा संग्रहण कार्य दिया जावेगा।
4. फर्म/एजेंसी अपने पंजीकरण एवं अन्य आवश्यक दस्तावेजों की स्वप्रमाणित प्रतियां संलग्न करेगी।
5. कार्य संबंधित शर्तें ग्राम पंचायत के साथ MOU में निश्चित की जायेगी।
6. तीन माह के बाद संबंधित फर्म / सोसाइटी की परफॉरमेंस के आधार पर ही आगे का समय बढ़ाया जायेगा।

इच्छुक फर्म/एजेंसी/संस्था अपनी सीलबंद कोटेशन दिनांक 28/08/2026 तक महाग्राम पंचायत चांग को भेज/जमा करवा सकती है।

श्रीमति सुदेश रानी, सारवि, महाग्राम चांग, खण्ड एवं जिला भिवानी, मो. 9991614962

भविष्य में किए जाने वाले विकास कार्यों की घोषणाएं कर सकते हैं सीएम

दीपक कुमार डुमड़ा ►►बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा दादू नगरी में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी 6 सितंबर, रविवार को धन्यवादी दौरे के लिए पहुंचेंगे। विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा प्रत्याशी कपूर वाल्मीकि और नगर पालिका अध्यक्ष सुंदर अत्री के चुनाव प्रचार के लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बवानीखेड़ा में शिरकत की थी। उस दौरान उन्होंने भाजपा प्रत्याशियों की जीत के बाद क्षेत्र की जनता के बीच धन्यवाद दौरे पर आने का वचन दिया था और कहा था कि यहां की जनता निश्चित रहे, भाजपा

प्रत्याशियों को जिताने पश्चात उनकी हर मांग पूरी होगी। अब मुख्यमंत्री वायदे को पूरा करते हुए बवानीखेड़ा में धन्यवाद दौरे के लिए पहुंचेंगे। मुख्यमंत्री के प्रस्तावित दौरे को लेकर क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। दौरे के दौरान मुख्यमंत्री बवानीखेड़ा हलके में हुए विकास कार्यों की जानकारी लेने के साथ-साथ भविष्य में किए जाने वाले विकास कार्यों को लेकर भी घोषणाएं कर सकते हैं व किसानों को पूरा पानी मिलने की भी उम्मीद जताई जा सकती है। क्षेत्रवासियों को उम्मीद है कि मुख्यमंत्री के दौरे से बवानीखेड़ा के विकास को नई गति मिलेगी।

खास बातें

- मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का धन्यवादी दौरा
- विधायक कपूर वाल्मीकि, नपा प्रधान सुंदर अत्री, मार्किट कमेटी प्रभान राजू, हंस सहित अनेक ने किया कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण
- हल्कावासियों को उम्मीद मिलेगा उपमंडल का तोहफा किसानों को पूरा पानी मिलने की आस

मुख्यमंत्री के समक्ष बवानीखेड़ा हलके की विकास संबंधी आवश्यकताओं को प्रमुखता से रखा जाएगा

मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर हलका विधायक कपूर वाल्मीकि और नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्री, मार्किट कमेटी प्रधान राजू हंस आदि ने कार्यक्रम स्थल का मौके पर निरीक्षण किया। सभी ने सामान्य बस स्टैंड के सामने वीकें फोटोस्टेट एवं फनकार कार्यालय के पीछे स्थित मैदान में पहुंचकर पानी निकाली, सफाई व्यवस्था, मिट्टी भरत तथा अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित कर्मचारियों को कार्यक्रम से पहले सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए। विधायक कपूर वाल्मीकि और चेयरमैन सुंदर अत्री, मार्किट कमेटी चेयरमैन राजू हंस ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए तैयारियां सुदृढ़स्तर पर की जा रही हैं। मैदान में पानी निकाली की व्यवस्था को बेहतर करने के साथ-साथ सफाई करवाई जाएगी। आवश्यकता के अनुसार मैदान में मिट्टी भरत भी करवाया जाएगा, ताकि कार्यक्रम स्थल समतल एवं सुविधाजनक बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का बवानीखेड़ा दौरा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण अवसर है। मुख्यमंत्री के समक्ष बवानीखेड़ा हलके की विकास संबंधी आवश्यकताओं को प्रमुखता से रखा जाएगा। क्षेत्रवासियों को मुख्यमंत्री के दौरे से विकास कार्यों को लेकर बड़ी उम्मीदें हैं। विधायक कपूर वाल्मीकि और नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्री ने भाजपा कार्यकर्ताओं एवं क्षेत्रवासियों से मुख्यमंत्री के स्वागत कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने की अपील की।



बवानीखेड़ा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण करते हुए विधायक कपूर वाल्मीकि, नपा प्रधान सुंदर अत्री, मार्केट कमेटी प्रधान राजू हंस, डा. बृता राम धमनी, श्याम सुंदर आदि। फोटो : हरिभूमि

पुरानी मांगों की हो सकती है घोषणा

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के बवानीखेड़ा धन्यवादी दौरे को लेकर हल्कावासियों की उम्मीदें बढ़ी हैं कि वर्षों पुरानी उपमंडल की मांग की घोषणा के साथ साथ आईटीआई, को एडिड कॉलेज सहित अन्य वर्षों पुरानी मांगों की घोषणा हो सकती है। जिससे हल्कावासियों को फायदा होगा और विधायक कपूर वाल्मीकि, नपा प्रधान सुंदर अत्री, मार्केट कमेटी प्रधान राजू हंस आदि का धन्यवाद करेंगे।

खबर संक्षेप

बाढ़डा से झोड़ू को जोड़ने वाली सड़क में बने गड्डे

बाढ़डा। बाढ़डा से झोड़ू को जोड़ने वाला मुख्य सड़क मार्ग बदहाली की मार झेल रहा है। वर्षों पहले बनी यह सड़क अब पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। जगह-जगह बने गहरे गड्ढों के कारण राहगीरों और वाहन चालकों का सफर जोखिम भरा हो गया है। खासकर दोपहिया वाहन चालकों को सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण आनंद, विजय पाल और सोमबीर ने बताया कि सड़क पर बने गहरे गड्ढे आए दिन दुर्घटनाओं का कारण बन रहे हैं। कई बार मोटरसाइकिल और स्कूटर सवार अस्त्रुलित होकर गिर चुके हैं। रात के समय अंधेरे में गड्ढे दिखाई नहीं देने से हादसों का खतरा और बढ़ जाता है।

राधा स्वामी शाखा में नामदान व भंडारा 27 को

चरखी दादरी। रक्षाबंधन पर 27 अगस्त को दादरी-भैरवी गांव के नजदीक लोहारू रोड स्थित राधा स्वामी सत्संग (दिनोद) शाखा चरखी दादरी में सत्संग, नामदान एवं भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम हनुज कंवर साहेब के पावन सानिध्य में होगा। आश्रम के मुख्य सेवादार प्रदीप सांगवान ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह 9 बजे सत्संग एवं भंडारे के साथ होगा, जबकि हनुज कंवर साहेब के आध्यात्मिक प्रवचन दोपहर 12 बजे से शुरू होंगे। इस दौरान नामदान कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में रक्तदान शिविर भी लगाया जाएगा।

59वीं राज्य स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ

खेलों से होता है शारीरिक व मानसिक विकास: ढांडा

►► दादरी विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत की

हरिभूमि न्यूज़ ►► चरखी दादरी।

गांव बरसाना स्थित कैप्टन जिले सिंह स्कूल में शनिवार को 59वीं तीन दिवसीय राज्य स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। प्रदेश के शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्री महिपाल ढांडा ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एवं ध्वजारोहण के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। दादरी विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में शिरकत की। प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश के सभी जिलों से पहुंची टीमों ने मार्च पास्ट किया। कैबिनेट मंत्री महिपाल ढांडा और विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया। तीन दिवसीय प्रतियोगिता में 14, 17 और 19 आयु वर्ग की कबड्डी टीमों हिस्सा ले रही हैं। इसके अलावा अन्य प्रतियोगिताएं भी होंगी।

कैबिनेट मंत्री महिपाल ढांडा ने कहा कि खेल बच्चों और युवाओं



चरखी दादरी। प्रतियोगिता के शुभारंभ पर मंच पर मौजूद कैबिनेट मंत्री महिपाल ढांडा, विधायक सुनील सांगवान व अन्य।

ये रहे मौजूद

इस दौरान भाजपा दादरी जिला अध्यक्ष राष्ट्रदीप परमार, सीटीएम सुरेश दलाल, जिला शिक्षा अधिकारी धर्मेन्द्र चौधरी, कैप्टन जिले सिंह स्कूल के डायरेक्टर जयपाल सांगवान, मनवीर चौधरी, डीएसओ विष्णु भगवान, सीती साहू, जिला शारीरिक शिक्षक संघ के प्रधान अशोक डीपीई आदि भी मौजूद रहे।

के शारीरिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केंद्र और राज्य सरकार की खेल प्रोत्साहन नीतियों के परिणामस्वरूप हरियाणा के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने खिलाड़ियों से अनुशासन, मेहनत और खेल भावना के साथ आगे बढ़ने तथा खान-पान पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया।

विधायक सुनील सतपाल सांगवान ने कहा कि दादरी खेल, वीरता और संस्कारों की भूमि है।

हर्षाली ने सीबीएसई नॉर्थ जोन जूडो में जीता रजत

मिवानी। लिटिल हार्ट्स पब्लिक स्कूल की छात्रा हर्षाली ने सीबीएसई द्वारा आयोजित एचडी पब्लिक स्कूल बालंद रोहतक में सीबीएसई नॉर्थ जोन द्वितीय जूडो चैंपियनशिप के अंडर-14 ग्रुप में अपनी अद्भुत प्रतिभा का पदर्शन कर रजत पदक जीता और अपने विद्यालय, अभिभावकों व जिले का नाम रोशन किया। वहीं हर्षाली ने राष्ट्रीय स्तर पर जूडो चैंपियनशिप के लिए क्वालिफाई किया।

इस अवसर पर विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एमडी पवन गोयल व भावना गोयल, प्रबंधक सीती गोयल व रवि कुमार गोयल ने बताया कि इससे पहले ही लिटिल हार्ट्स के विद्यार्थी अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न खेल स्पर्धाओं में विद्यालय का परचम लहरा चुके हैं। उन्होंने हर्षाली के अभिभावकों को शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी व भविष्य में भी इसी प्रकार अवसर होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हर्षाली की सफलता ने लिटिल हार्ट्स ग्रुप व अभिभावकों को गौरवान्वित किया है। इस अवसर पर निदेशक रामानन्द सिंहल, ऐश्वर्या सिंहल, राहुल गोयल, विनय गोयल, निशचल गोयल, साक्षी गोयल, प्रियांश गोयल, प्राचार्य दीपक जोशी, उपप्राचार्य मनमोहन चावला, कोच जितेन्द्र आदि ने आशीर्वाद दिया।

जिले के अनेक खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों और युवाओं को



सीबीएसई नॉर्थ जोन जूडो में पदक जीतने वाली हर्षाली।

खेलों को भी जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। खेलों से अनुशासन, आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की भावना विकसित होती है।



चरखी दादरी। नए लघु सचिवालय भवन के निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को निदेश देतीं उपायुक्त मनदीप कौर।

उपायुक्त के सख्त निर्देश, तुरंत दूर करें लघु सचिवालय की कमियां

चरखी दादरी। उपायुक्त मनदीप कौर ने नए लघु सचिवालय भवन का निरीक्षण कर लोक निर्माण विभाग को सख्त निर्देश जारी किए किए हैं। उपायुक्त ने कहा है कि भवन में जो भी कमियां सामने आई हैं, उनको तुरंत दूर करवाएं। साथ ही जो भी कार्य सही तरीके से करने को कहा गया है, उनको भी तुरंत पूरा करें। ताकि जल्द से जल्द कार्यालयों को इस भवन में शिफ्ट किया जा सके। उपायुक्त अधिकारियों के साथ भवन का निरीक्षण करते पहुंची थी। उन्होंने एक-एक करके सभी मंजिलों का जायजा लिया और कहा कि बिजली, पानी व सीवर के बिना भवन में कोई भी नहीं बैठ सकता है। ऐसे में तुरंत प्रभाव से इन तीनों व्यवस्थाओं को पूरा करके टेस्टिंग की जाए। मुख्य द्वार के पास अधिकारियों के वाहनों के खड़ा होने के लिए शेड बनवाएं। साथ ही एसी से निकलने वाले पानी को ड्रेनेज तक पहुंचाने की व्यवस्था भी की जाए। ताकि पानी की वजह से भवन को कोई नुकसान ना हो। उन्होंने कहा कि पीडब्ल्यूडी की बागवानी शाखा पूरे भवन में हर मंजिल पर अलग अलग रंगों के बड़े गमले में अंदर लगने वाले पौधे लगाना सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि कई व्यवस्थाओं को लेकर सरकार और न्यायालय के दिशा निर्देश हैं। ऐसे में इन व्यवस्थाओं को उसी अनुसार देखा जाए।

- अधिकारियों के साथ उपायुक्त ने लिया भवन का जायजा

रक्षाबंधन पवित्रता एवं प्रेम का प्रतीक: एसपी

मिवानी। हमारा भारत देश विभिन्न प्रकार के त्योहारों का देश है, हमारी संस्कृति में प्रत्येक त्योहार का विशेष महत्व होता है। उसी प्रकार रक्षाबंधन का अपना अलग ही महत्व है, ये बात पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार ने प्रजापिता बटमाकुमारजी की शाखा सिद्धिस्थान प्रमुख राजयोगिनी बीके सुमित्रा बहन से अपनी कलाई पर रक्षा सूत्र बंधवाते हुए कही। एसपी सुमित ने कहा कि रक्षाबंधन पर्व पवित्रता एवं प्रेम का प्रतीक है, ये पर्व भाई-बहन के रिश्ते को मजबूत बनाता है। अगर हम हर नारी व बेटों को अपनी बहन व माता की दृष्टि से देखें तो रक्षाबंधन पर्व का महत्व पूर्ण रूप से सार्थक होगा। इसके साथ-साथ ही आए दिन हो रही आपराधिक घटनाओं पर भी अंकुश लगाने तथा हमारी बहन-बेटियों अपने आप को सुरक्षित रहसुस करेंगी। इस दौरान बीके सुमित्रा ने इश्वरीय सौभाग्य के साथ-साथ ज्ञानअमृत की किताल भेंट की। इस मौके पर बीके नीलम, बीके राजेश, बीके भीमसिंह चौहान व मीडिया कॉन्डिटर बीके धर्मवीर आदि मौजूद रहे।



हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, शॉप नं. 47, इन्फ्यूमेंट ट्रस्ट मार्केट, मिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10 X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
मिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इन्फ्यूमेंट ट्रस्ट मार्केट, मिवानी
फोन नं. : 8814999170, दादरी : 9253681008

सांगवान स्कूल के राशन में कीड़े मिलने पर एक अध्यापक सस्पेंड, दूसरे को थमाया नोटिस

तोशाम। गांव सांगवान स्थित सरकारी स्कूल के राशन में कीड़े मिलने के मामले में शिक्षा विभाग भी सख्त हो गया और एक्शन लिया। मिवानी के जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी विनय कुमार ज़िंदल ने लापरवाही को लेकर एक टीचर को सस्पेंड कर दिया और दूसरे को शोर्काज नोटिस दिया गया है। इसके अलावा 2 कुक को भी हटाय़ा गया है। कॉन्क्रेट जलता पार्टी की टीम ने स्कूल ठीक करो अभियान के तहत सांगवान गांव के प्राइमरी स्कूल की वीडियो जारी की थी। जिसमें राशन में कीड़े-सुरसरी चलते दिख रहे हैं। कमरों की दीवारों में बड़ी दरारें हैं और टॉयलेट बेहद खराब हालात में दिख रहे हैं। टीम के एक सदस्य ने बताया कि हरियाणा के स्कूल ठीक करो अभियान के तहत स्कूलों में जाकर स्थिति देखी जा रही है। उसे समझ उन्होंने मीड डे मील की वीडियो बनाकर जारी की थी। सीजेपी द्वारा जारी वीडियो में फर्श पर बिखरे गेहूं में सुरसरी घूमती दिखी। पॉलीथीन में पड़ी मूंफाली के दानों में चोटियां दिखीं। टॉयलेट पर नॉट इन यूज लिखकर खानपूति कर दी गई। यह फीमल में बड़ी दरारें हैं। इसके बाद दूसरे टॉयलेट दिखते हैं जिसकी छत व दीवारें टूटी हुई हैं। उन्होंने कहा कि स्कूल की दीवारों में दरार आई हुई थी। बता दें कि गांव सांगवान के प्राइमरी स्कूल में 40 विद्यार्थी पढ़ते हैं। इनको पढ़ाने के लिए स्कूल में 3 टीचर हैं।



तोशाम। गेहूं में लगी सुरसी तथा स्कूल में मिड डे मील के दौरान खराब राशन का दृश्य।

15 अगस्त का वादा निकला खोखला : इमरान

विद्युत कर्मियों ने सांसद प्रतिनिधि को सौंपा ज़ापन

हरिभूमि न्यूज़ ►►मिवानी

हरियाणा सरकार द्वारा अगस्त 2024 में जाँब सिक्योरिटी एक्ट के नाम पर कर्मचारियों को दिखाए लुभावने वायदों और दो साल बीत जाने के बाद भी धरातल पर कोई लाभ नहीं मिलने से प्रदेशभर के कच्चे बिजली कर्मचारियों में भारी आक्रोश है। इसी कड़ी में अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित भारतीय मजदूर संघ के बैनर तले कर्मियों ने भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मवीर सिंह की अनुपस्थिति में उनके निजी सहायक पंकज शर्मा को मुख्यमंत्री के नाम ज़ापन सौंपा



मिवानी। सांसद के निजी सचिव पंकज शर्मा को ज़ापन सौंपते अनुबंधित विद्युत कर्मचारी।

और मांगों को लागू करवाने की आग्रह किया। संघ के जिला प्रधान इमरान बापोड़ा ने सरकार व बिजली निगम प्रशासन की नीतियों पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि सरकार मंचों से दवा करती है कि उनको एक लाख 20 हजार कच्चे कर्मचारियों को जाँब सुरक्षा दे दी है, लेकिन हकीकत में किसी को कोई लाभ नहीं मिला।

उन्होंने कहा कि गत 15 अगस्त तक सभी कर्मचारियों को जाँब सुरक्षा पत्र जारी करने का वादा किया था, लेकिन वह तारीख भी निकल गई और कर्मचारी खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। अधिकारी रोज नए-नए पत्र जारी करके और फालों का बहाना बनाकर कर्मचारियों को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों में

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जिला मंत्री संदीप बागनवाला, मनजीत बारवास, सुमित लोहारू, जयवीर, संदीप बोलहा, पवन सिवाना, राकेश, वीरेंद्र तोशाम, मनवीर, संदीप मोगली, सुनील पंढाल, सुरेश राठौड़, कृष्ण व सुमित आदि मौजूद रहे।

व्याप्त रोष को देखते हुए संगठन ने आर-पार की लड़ाई का बिगुल फूंक दिया है। इमरान ने स्पष्ट किया कि 20 से 26 अगस्त तक सत्ता पक्ष और विपक्ष के सभी विधायकों तथा सांसदों को मुख्यमंत्री के नाम ज़ापन सौंपकर अपनी बात मजबूती से रखी जा रही है।

मिवानी में रक्तक्रांति के जनक प्यारेलाल की जयंती पर 31 ने किया रक्तदान

- स्वर्गीय प्यारेलाल ने भिवानी ही नहीं, पड़ोसी राज्यों में भी जलाई थी रक्तदान की अलख : डुडेजा

हरिभूमि न्यूज़ ►► मिवानी

भिवानी जिले में रक्तदान की अलख जगाने वाले और युवाओं के प्रेरणास्रोत रक्तक्रांति के जनक स्वर्गीय प्यारेलाल सांगवान की जयंती पर शनिवार को कोट रोड मिनी बाईपास चौक स्थित निजी रेस्तरां में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित किया, जिसमें एम्स बादसा से आई विशेष मैडिकल टीम

भिवानी। रक्तदाताओं को सम्मानित करते रक्तवीर राजेश डुडेजा।

ने रक्त संकलन का कार्य किया। शिविर में 31 युवाओं ने रक्तदान किया। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने कहा कि भिवानी में रक्तदान की जो मजबूत मुहिम आज अलख तगाई। उन्हीं के अथक प्रयासों का नतीजा है कि आज हजारों युवा इस जीवनदायिनी मुहिम से जुड़कर नियमित रक्तदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नियमित रक्तदान से शरीर में नया रक्त बनता है।

जनसेवा के संकल्प से दादरी को देंगे नई ऊंचाइयां : विधायक सुनील

हरिभूमि न्यूज़ ►► चरखी दादरी

भाजपा के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष एडवोकेट राष्ट्रदीप परमार ने विधायक सुनील सांगवान के आवास पर शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान जिलाध्यक्ष ने विधायक को गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित किया। मुलाकात में पंचार बाहुल्य क्षेत्र के अनेक सरपंचों, पार्टी पदाधिकारियों और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही।

विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि भाजपा परिवार के लिए यह आत्मीय मुलाकात संगठनात्मक एकजुटता और जनसेवा के संकल्प का प्रतीक है। कार्यकर्ताओं के सहयोग, जनता के विश्वास और मजबूत संगठन के बल पर चरखी दादरी के विकास को नई गति दी जाएगी। वहीं जिलाध्यक्ष राष्ट्रदीप परमार ने संगठन को बूथ स्तर तक और अधिक सशक्त बनाने तथा कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने की प्रतिबद्धता दोहराई। इस अवसर पर बौंद सरपंच अत्तर सिंह,



रोहतक। विधायक सुनील सांगवान को सम्मानित करते जिलाध्यक्ष राष्ट्रदीप परमार व अन्य।

रणकोली सरपंच प्रेम, पूर्व मंडल प्रधान मुंशीराम साहू, रामोतार गोड़, गौरव सरपंच, जितेंद्र यादव, अनिल कुमार, सुरेंद्र यादव, मंडल प्रधान सुरेश कुमार, जितेंद्र सांवड़, संजय बंसल, कृष्ण कोहलावास, सतपाल, गजेंद्र पंचार, नाथू सिंह, संदीप पंचार व बबलू चैयरमैन सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी



विज्ञान सेमिनार में प्रणिता ने हासिल किया द्वितीय स्थान

चरखी दादरी। खंड स्तर पर आयोजित विज्ञान सेमिनार में आरहंडी स्कूल चरखी की कक्षा नवौं की छात्रा प्रणिता ने शानदार प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान हासिल किया। इस उपलब्धि से विद्यालय में खुशी का माहौल है। खंड स्तरीय विज्ञान सेमिनार में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रणिता ने ऊर्जा संग्रहण विषय पर प्रभावशाली प्रस्तुति दी। विषय की स्पष्ट समझ, प्रस्तुति कोशल और आत्मविश्वास के साथ दिए गए उनके वक्तव्य ने निर्णायक मंडल को प्रभावित किया, जिसके आधार पर उन्हें द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। विद्यालय की प्राचार्या मितिका श्योराम तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों ने छात्रा प्रणिता और उसके अभिभावकों को इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता छात्रा की मेहनत, लगन और शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है।



युवा संसद में विद्यार्थियों ने प्रस्तुत की संसदीय कार्यवाही

चरखी दादरी। कस्बा झोड़ू के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में युवा संसद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता की तैयारी राजनीति विज्ञान प्रवक्ता रचना कुमारी, इतिहास प्रवक्ता इंद्रा ओझा, रसायन विज्ञान प्रवक्ता कपिल तथा राजनीति विज्ञान प्रवक्ता धर्मेन्द्र कुमार के नेतृत्व में करवाई गई। बिरही डाइट से ओमप्रकाश, मंजीता और अनिता कुमारी की टीम ने प्रतियोगिता का निरीक्षण किया। निरीक्षण टीम ने विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत युवा संसद की सराहना करते हुए उनके प्रयासों को प्रशंसा की। विद्यालय प्राचार्य सोनू संगवान ने विद्यार्थियों को युवा संसद के उद्देश्य से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि युवा संसद के माध्यम से विद्यार्थियों को संसद की कार्यवाही, लोकतांत्रिक प्रक्रिया और जनप्रतिनिधियों की भूमिका को समझने का अवसर मिलता है।

नये और साइबर अपराध के प्रति छात्रों को किया सचेत

चरखी दादरी। गांव समसपुर स्थित जीके वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पुलिस अधीक्षक कार्यालय की टीम ने विद्यार्थियों को नये की बढ़ती प्रवृत्ति, उसके दुष्प्रभावों तथा साइबर अपराधों से बचाव के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम के दौरान टीम ने बताया कि नशा समाज को धीरे-धीरे खोखला कर रहा है और युवा वर्ग तेजी से इसकी चपेट में आ रहा है। विद्यार्थियों को नये से दूर रहने, गलत संगति से बचने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी परिजनों अथवा पुलिस को देने के लिए प्रेरित किया गया। टीम ने साइबर अपराधों के संबंध में भी विस्तार से जानकारी देते हुए ऑनलाइन ठगी, फर्जी लिंक, ओटीपी साझा करने और सोशल मीडिया पर होने वाली धोखाधड़ी से बचाव के उपाय बताए। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से एसआई नरेंद्र, रविन्द्र तथा दुर्गा शक्ति टीम से सुमन मौजूद रही। विद्यालय की ओर से प्राचार्य अनूप सिंह, जयवीर, संदीप कुमार, सुमन, शर्मिला और अनिता सहित स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीशरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, 'कुछ चाहिए तो बताना।' किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। 'आप', 'आइए', 'बैठिए', 'खाइए', 'कैसे हैं?... ' ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल 'हाय', 'हेलो' 'ओके', 'कूल' 'ब्रो' या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल 'आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं' कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल 'असंस्कारी' होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं हैं। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार 'अलग' दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

ध्यान रखने की प्रवृत्ति: बेलाग भाषा कई बार 'कूल', 'बोल्ड' या 'बेबाक' दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदली जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक

मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूंढना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है। **मिलती है सकारात्मक ऊर्जा:** बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निरचल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियां फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईपारे का यही मरजाद राखी आ गई

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, 'प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?' सासू मां बोलीं, 'अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगा।' 'जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।' उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, 'फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?' बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। 'कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।' फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

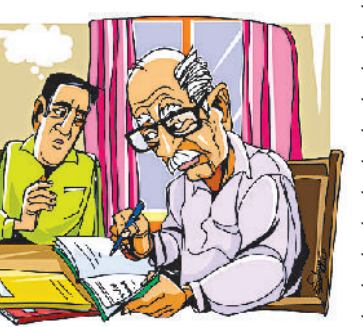
वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, 'अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?' बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, 'आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।' कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, 'पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता प्रा। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर

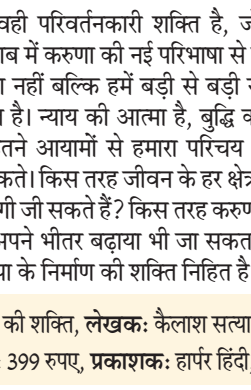
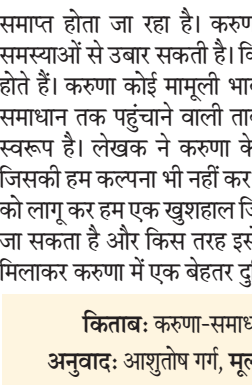
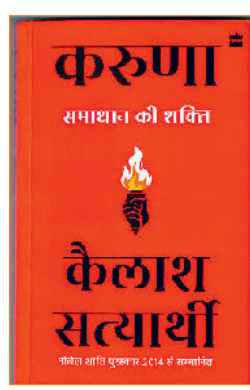


बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

—कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपए, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम



देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मंशरूम पाउडर

आपके नजदीकी मोमो मिडिक स्टोर पर उपलब्ध।
Availability: www.mymushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वजन बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वजन है, तो वजनवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व ओणम

फूलों की रंगोलियों से सजे आंगन, सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, लोकनृत्यों की थिरकन और केले के पते पर परोसा गया ओणसदा। ओणम में केरल की संस्कृति अपने सबसे जीवंत रूप में नजर आती है। राजा बलि की पौराणिक गाथा से जुड़ा यह पर्व आस्था, प्रकृति से जुड़ाव, परंपरा, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का अद्भुत संगम है। विगत सप्ताह आरंभ हो चुके इस सांस्कृतिक उत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

पर्वाँल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं

इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसदा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने



पारंपरिक वेशभूषा में ओणम मनाते स्थानीय कलाकार

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की



ओणम की सांस्कृतिक पहचान है सर्प नौका दौड़

रंगोलियां बनाई जाती हैं। प्रत्येक दिन रंग-बिरंगे फूलों से सजने वाली यह रंगोली प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। फूलों की इन रंगोलियों को यहां की स्थानीय भाषा में पुक्कलम कहा जाता है। ओणम के दौरान पारंपरिक नृत्य तिरुवात्तराकली, कुम्माट्टिकली, पुलिकली (बाघ नृत्य) और कथकली की प्रस्तुतियां पूरे राज्य में आकर्षण का केंद्र बनती हैं। लोकगीतों की मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज से इस दौरान केरल के गांव और शहर झूम उठते हैं। इसी समय होने वाली केरल की प्रसिद्ध वल्लमकली (सर्प नौका दौड़) तो विश्व भर में ओणम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। इन लंबी-लंबी नौकाओं के अगले सिरे सांप के फन जैसे होते हैं। इनमें सैकड़ों नाविक एक साथ पूरे तालमेल

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसदा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसदा के बिना अधूरा है। केले के पते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूंकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की

खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवेन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। 'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्रे रिच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी



बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूं तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूं?' **एनर्जी को दें सही दिशा:** एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लांट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट



सैनिकों के लिए राखियां बनाती स्कूली छात्राएं

में आने से अपना दाहिना हाथ खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कोरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लांट किया गया।

मोडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर, वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं

लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *



वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं

लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा रतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं।

बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता: पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सतर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है।

संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम

भाई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केन्द्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकताओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। भाई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई भाई-बहन के रिश्ते की दास्तान



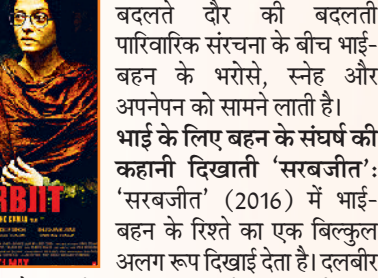
साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और आदर देते हैं।

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी किसी की कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी



को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है।

आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं।



बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और आपनेपन को सामने लाती है।

भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत': 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी किसी की कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

पर्ट से बाहर भी बने भाई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताउम्र निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।

